

नेपाल और इंग्लैंड में साफाई का फैज़

दैनिक समाज जागरण

भारत में भाजपा गठबंधन की सरकार जैसे-तैसे बच गयी लेकिन पड़ोस में नेपाल और इंग्लैंड की सरकारें गिर गयी। नेपाल में सरकार बैशाखी हटने से गिरी जबकि इंग्लैंड में जनादेश से। दुनिया में सरकारों का बनना, बिगड़ना एक सनातन प्रक्रिया का अंग है, लेकिन इनके बनने-बिगड़ने का असास-पड़ोस पर भी पड़ता ही है। भारत के साथ भी वही फार्मला लागू होता है। इसलिए भारत और भारतवासियों को इन घटनाओं पर नजर रखना पड़ती है।

सबसे पहले बात नेपाल की की। यहाँ प्रधानमंत्री पुष्प प्रचंड की सरकार आखिर पिर गयी। सतारा थार गठबंधन के सहयोगी सीपीएन-यूएमपाल ने प्रचंड को हटाने के लिए सबसे बड़ी पार्टी (नेपाली कांग्रेस) के साथ सत्तासाहिती समझौते के बाद समर्थन वापस ले लिया है। अब यहाँ के पी



शर्मा 'ओली' के मुख्यमंत्री बनने की संभावना है। शर्मा जी भारत के नहीं चीन के समर्थक हैं। इसलिए भारत को शर्मा जी के आने से परेशनी होना स्वाभाविक है। नेपाल में पिछ्ले 16 साल में 13 सरकारें गिरे हैं, नेपाल की सरकारों के गिरने की कहानी अलग है। अभी तो हास प्रचंड के जने और ओली के आने की बात कर रहे हैं। नेपाल में हमारे कुछ साहित्यिक मित्र हैं जो बताते रहते हैं की प्रचंड ने भारत की तर्ज पर नेपाल को हिन्दू राष्ट्र बनाने की दिशा में काफी काम किया। भारत में राम लाला की प्राण-प्रतिष्ठा समरोह के मौके पर नेपाल में भी एक उन्माद पैदा करने की कोशिश की गयी। दीपावली मनाई गयी, लेकिन राम जी नेपाल सरकार के काम नहीं आये। प्रचंड को आखिर जाना ही पड़ा, दुनिया में धर्म की राजनीति ज्यादा नहीं चलती। वहाँ भी जहाँ धार्मिक आधार पर ही चुनाव होते हैं। बहरहाल हमें शर्मा जी के जने और ओली के आने पर सरकार रहने की जरूरत है, क्योंकि खरबजे के देखिक खरबजा रंग बदलता है।

हमारे सरकार के सहयोगी दल भी कब अपनी बैशकीयां हातकर मोदी जी को प्रचंड के जाने और ओली के आने पर असहाय कर दें कई नहीं जानता।

अब चलाए इंग्लैंड। वहाँ भारत के कथित दमाद ऋषि सुनक की सरकार थी। ताजा चुनाव में इंग्लैंड की जनता ने सुनक की पार्टी को सत्ता से बाहर कर दिया। इस परिवर्तन में भारतवासियों तक ने सुनक साहब का साथ नहीं दिया। सुनक को भारत की सरकार भारत का दमाद मनाती थी। मानना ही चाहिए। हमरे यहाँ गांव-गोड़े के रिश्ते बहुत चलते हैं। लेकिन सुनक साहब ने प्रधानमंत्री रहते हुए न भारत के लिए बहुत कुछ किया, और न भारतवासियों के लिये। नीति जो हुआ कि उन्हें अब सत्ता से बाहर जाना पड़ा। सुनक के प्रधानमंत्री बनने पर उनके भारतवासी होने को लेकर कभी कोई विवाद नहीं उठा, अन्यथा वहाँ कोई गुजराती प्रतिद्वंद्वी होता तो उन्हें श्यामा गाय का बछड़ा कह सकता था। हमरे यहाँ तो इटली मूल की भारतीय बहू को 'जर्सी गाय' और बारबाला' के बोने वाले अनेक विद्वान हैं। बहरहाल ब्रिटेन में चार जुलाई को हुए अम्ब चुनाव में लेबर पार्टी ने बहुमत हासिल कर लिया है। कंजर्वेटिव पार्टी को अब तक की सबसे बुरी हार का समान करना पड़ा है। लेबर पार्टी के नेता कांग्रेस स्टार्मर महाराजा चाल्स तृतीय से मुलाकात के बाद आधिकारिक तौर पर ब्रिटेन के नए प्रधानमंत्री बन गए हैं। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रिटेन के आम चुनाव में जीते के लिए लेबर पार्टी के नेता कीर स्टार्मर को बधाई दी तथा दोनों देशों के बीच व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के साथ ही पारस्परिक विकास व समुद्दिश को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक व रचनात्मक सहयोग की उम्मीद जताई। मोदी जी ने इसके साथ ही परिवर्तन में व्यापक रणनीतिक साझेदारी को और सरगना की और अपने कायकाल के द्वारा भारत और ब्रिटेन के संबंधों को प्रगाढ़ करने में उनके द्वारा किया गया विकास की प्रतीक आधार जताया। भारत के आसपास में श्रीलंका है, पकिस्तान है, चीन है इन सबसे हमारे रिश्ते कैसे हैं, ये बताने की जरूरत नहीं। पाकिस्तान से हमारी कुपी हुई हारा सोना होता है। चीन को हम सारपरमी में ज्वाला झिला चुके हैं, लेकिन उसकी फिरत नहीं बदलती। पकिस्तान की फिरत तो बदलने का सबाल ही नहीं। श्रीलंका भी चीन के प्रभाव में है। उसके ऊपर हमारा प्रभाव न जाने क्यों नहीं पड़ रहा। श्रीलंका वाले तो हमारे मोदी जी के शपथग्रहण समारोह में भी नजर नहीं आये। जो पड़ोसी आये थे उनसे से मालदीव वाले भी मन मारकर आये थे। ये सारे सन्दर्भ में इसलिए आपके सामने रख रहा हूँ क्योंकि आसपास की राजनीतिक गतिविधियां भारत के अनुकूल नहीं हैं।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात बनने वाली नहीं है।

भारत में नेपाल जैसी ही गठबंधन की सरकार है। हमारी कामना और प्रार्थना है कि ये सरकार पूरे पांच साल चले, क्योंकि भारत जैसा गरीब देश दो-दोस्ती साल में चुनाव की मार सहन की फिरत नहीं है। लेकिन हमारी 'कामना और प्रार्थना' से बात ब

